Daayre (Hindi)

Rajneesh Gautam

Final year medical student
University College of Medical Sciences & GTB Hospital, Delhi-95, India

Corresponding Author:
Rajneesh Gautam
1/5804, Street No.11, Balbeer Nagar, Shahdara, Delhi-110032
Email: rajgautam.rohit at gmail dot com

Received: 23-JUN-2014 Accepted: 10-JUL-2014 Published Online: 03-DEC-2014

दायरों मे है बंधी मेरी जिंदगी,
है कहाँ तक फैले ये कौन जाने |
कुछ तो मेरी आँखों मे हैं झाँकते,
और कुछ छिपे हैं मेरे बिस्तर के सिरहाने |

कुछ हैं कच्चे धागे से,
ऊन के गोले से लिपटे हुए |
और कुछ लोहे की बेड़ियों से,
पैरों को हैं मेरे जकड़े हुए |

खुद मैंने बनाये हैं ये या,
हैं मेरे लिये ही ये बनाये |
ये दायरे, अनकही और अनछुई सी,
अपने अंदर एक अलग ही दुनिया बसाये |

तोड़ता हूँ मैं इनमे से किसी एक को भी अगर,
रोते हैं बाकी सब मुझसे लिपटकर |
घुट घुट के काटूँगा क्या ये ज़िन्दगी,
या कैद हो जायूँगा इन दायरों मे मैं बिखरकर |

Cite this article as: Gautam R. Daayre (Hindi). RHiME [Internet]. 2014;1:25.